पंचम अध्याय

कहानी-कला की दृष्टि से ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों का मूल्यांकन

पंचम अध्याय

"कहानी-कला की दृष्टि से ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों का मूल्यांकन"

प्रास्ताविक

ओमप्रकाश वाल्मीकि एक अनुभव सिद्ध रचनाकार हैं। उनकी कहानियों में अनुभवों को साकार रूप मिला है। कहानी के संदर्भ में डॉ. सुरेंद्र उपाध्याय का कहना है - "कहानी यथार्थ की प्रतिच्छवि है जीवन भी है और जीवन का अनुभव भी। कहानीकार के लिए अनुभवों का सीधा साक्षात्कार आवश्यक है ।"[1] यहाँ ओमप्रकाश वाल्मीकि ने तो अपने जीवन का सीधा साक्षात्कार अपनी कहानियों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। दलित जीवन के माध्यम से समाज में व्याप्त अनेक समस्याओं पर उन्होंने करारी चोंट की है। उनकी कहानियाँ वर्ण संघर्ष की हैं। उस वर्ण संघर्ष की जिसे हम आधुनिक समाज में देखते हैं, पर उसे महसूस करने की अपेक्षा नजर-अंदाज करते हैं। उनकी कहानियाँ सच का आईना दिखाती हैं। ओमप्रकाश वाल्मीकि जी ने अपनी कहानियों में समाज व्यवस्था को अपना लक्ष्य मानकर उसे बदलने की मांग की है।

यहाँ हमें ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों का कहानी कला की दृष्टि से अध्ययन करना है। कहानी के बारे में उपेंद्रनाथ अश्क लिखते हैं - " पिछले सौ वर्षों में कहानी कला ने निश्चित रूप धारण कर लिया है, जिस प्रकार नाटक और उपन्यास की अपनी कला है इसी प्रकार अब,कहानी की भी अपनी निश्चित कला है।"[2] हमें यहाँ कहानी-कला की दृष्टि से ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों का अध्ययन करना हैं। कहानी कला की दृष्टि से अभिप्राय यही है कि ओमप्रकाश वाल्मीकि जी की कहानियाँ,

---

1 डॉ. सुरेन्द्र उपाध्याय - कहानी प्रवृत्ति और विश्लेषण, पृष्ठ 287

2 उपेंद्रनाथ अश्क - हिंदी कहानी एक अंतरंग परिचय, पृष्ठ 20

कहानी के तत्त्वों अर्थात् शीर्षक का चयन, कथावस्तु का संघठन, पात्रों का चरित्रांकन, कथोपकथन का संयोजन, अंतरिक रूप, भाषा-शैली और उद्देश्य की दृष्टि से कितनी सफल और कलात्मक है इसका मूल्यांकन करना। यहाँ कहानी कला की दृष्टि से विवेच्य कहानियों का विवेचन-विश्लेषण प्रस्तुत हैं --

5.1 शीर्षक -

कहानी हो या नाटक, उपन्यास हो अथवा कविता, इन सब में महत्त्वपूर्ण उसका शीर्षक होता है। कहानी कला में शीर्षक अपना एक अलग ही महत्त्व रखता है। इस संदर्भ में प्रतापनारायण टंडन का कथन दृष्टव्य है - " एक पाठक जब किसी कहानी को उठाता है तो, सबसे पहले उसकी दृष्टि कहानी के शीर्षक पर पड़ती है। इसलिए कहानी के सभी उपकरणों में प्राथमिक महत्त्व शीर्षक का ही होता है।"[1] अगर कहानी का शीर्षक 'अकाल' है तो पाठक को ' अकाल ' संबंधी जानकारी या उस कहानी को जानने की जिज्ञासा उसके मन में हो तो ' अकाल' कहानी को वह अवश्य पढ़ेगा । प्रतापनारायण टंडन कहते हैं - " जिस प्रकार नाम के अभाव में किसी मनुष्य की कोई वैयक्तिकता नहीं होती उसी प्रकार शीर्षक के अभाव में किसी भी कहानी को समग्र रूपात्मक नहीं कहा जा सकता।"[2]

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानी के शीर्षक भी अपने-आप में अलग महत्त्व रखनेवाले हैं। उनके कहानी के शीर्षक विषयानुकूल, अर्थपूर्ण, छोटे, कहीं-कहीं बड़े, आकर्षक पाठकों को मोहित करनेवाले एवं उनपर प्रभाव डालनेवाले हैं।

हिंदी कहानियों के शीर्षक कथावस्तु की घटना अथवा पात्रों के नाम, चरित्रगुण या किसी स्थान विशेष के नाम पर रखे जाते थे। लेकिन नई कहानी के अधिकांश शीर्षक परंपरा से हटकर कहानी की मूल संवेदना जीवन दृष्टि और मानसिक स्थिति से संबंध

---

1 प्रतापनारायण टंडन - हिंदी कहानी कला, पृष्ठ 234

2 वही, पृष्ठ 235

रखते हैं। ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों के कुछ शीर्षक परंपरा को लेकर हैं, तो कुछ व्यक्ति विशेष को लेकर साथ ही कुछ कहानियों के शीर्षक स्थितिदर्शक भी दिखाई देते हैं। जैसे - ' सलाम', ' जिनावर ', ' मुंबई कांड', ' हत्यारे ', ' गोहत्या ', ' ग्रहण ' आदि ।

5.1.1 अर्थपूर्ण-प्रभावपूर्ण तथा आकर्षक शीर्षक -

किसी भी पाठक को की कहानी पढ़नी हो तो सबसे पहले वह शीर्षक को देखता है। अत: कहना स्वाभाविक है कि कहानी के शीर्षक अत्यंत महत्त्वपूर्ण होते हैं। ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों के शीर्षक अर्थपूर्ण तथा आकर्षक हैं। उन्होंने अपनी हर कहानी के शीर्षक संबंधी अपनी विचार शक्ति को सतर्क रखा है। इसलिए उनके कहानी के शीर्षक सार्थक, अर्थपूर्ण, कौतुहलपूर्ण और प्रभावी भी बन गए हैं।

सारांशत: वाल्मीकि की कहानियों के शीर्षक सार-गर्भित एवं कलात्मक रूप से व्यंजित दृष्टिगोचर होते हैं। उनके शीर्षकों में मौलिकता और ध्वन्यात्मकता के साथ-साथ उत्सुकतावर्धक लघुता और नवीनता आदि गुणों के दर्शन भी होते हैं।

ओमप्रकाश वाल्मीकि के आकार के अनुसार उनकी कहानियों के शीर्षक का विभाजन इस प्रकार किया जा सकता है

5.1.2 एक शब्दवाले शीर्षक -

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों के अधिकांश शीर्षक एक शब्दवाले हैं, जो पाठकों को प्रभावित करते हैं। जैसे -- 'गोहत्या,' 'रिहाई,' 'हत्यारे,' 'खानाबदोश,' 'घुसपैठिये,' 'प्रमोशन,' 'कुड़ाघर' आदि.....

5.1.3 दो शब्दवाले शीर्षक -

ओमप्रकाश वाल्मीकि जी ने दो शब्दवाले शीर्षकों की ओर ज्यादा ध्यान नहीं दिया । उनकी 'सलाम' और 'घुसपैठिये' कहानी संग्रहों में सिर्फ एक ही दो शब्दवाला शीर्षक दिखाई देता है और वह है 'मुंबई कांड़' ।

5.1.4 तीन शब्द वाले शीर्षक -

कहानी के शीर्षक के आकार के संबंध में कोई निश्चित नियम निर्धारित

नहीं है। फिर भी अर्थपूर्णता और आकर्षण इन गुणों पर ध्यान देते हुए ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में तीन शब्दवाले शीर्षक इस प्रकार मिलते हैं --

'बैल की खाल', 'जंगल की रानी', 'कहाँ जाए सतीश ?', 'बिरम की बहू', 'यह अंत नहीं' आदि ......

5.1.5 चार शब्दों वाले शीर्षक -

ओमप्रकाश वाल्मीकि जी ने सांकेतिकता को ध्यान में रखते हुए अपनी कहानियों के शीर्षक चार शब्दोंवाले भी रखे हैं --

जैसे - 'पच्चीस चौका ड़ेढ़ सौ' , ' मैं ब्राहमण नहीं हूँ ', 'दिनेशपाल जाटव उर्फ दिग्दर्शन आदि .....

कहानियों के शीर्षक ही पाठकों को आकृष्ट कर लेते हैं। इस दृष्टि से ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों के शीर्षक महत्त्वपूर्ण स्थान में आते हैं। वर्ना अच्छी कहानियाँ भी पाठक से वंचित रह जाती हैं। उनके शीर्षक आकर्षक उत्तेजक तथा सांकेतिक भी हैं।

निष्कर्ष - ओमप्रकाश वाल्मीकि ने कहानी के शीर्षक के गुणों को महत्त्व देते हुए अपनी कहानियों के शिर्षक विषयानुकूल, परिस्थितिनुकूल और अर्थपूर्ण रखे है तथा उनकी कहानी के शीर्षक रचनाकाल, घटनाकाल एवं पात्रों की भावनाओंका भी दयोतन करते हैं।

5.2 कथानक -

कथानक कहानी का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उपकरण है। कहानी की कथावस्तु लेखक के जीवनानुभव की उपज होती है। सामान्य साहित्य की भाँति ही कहानी की कथावस्तु का विषय-क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। इस संदर्भ में सुरेश सिनहा का वक्तव्य है - " कहानी में जो भी विषय लिया जाए उसका स्वरूप इस प्रकार का होना चाहिए कि उसे

कम से कम समय में अपनी पूर्णता के साथ अभिव्यक्त किया जा सके ।''[1] कहानी भोगे हुए यथार्थ से भी जन्म लेती है। ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियाँ तो बदनसीब जीवन और बदनसीब दिलों की धड़कन की विषयवस्तु लेकर हमारे सामने आयी है। कहानी के संदर्भ में डॉ. रघुवीर दयाल वार्ष्णेय का यह कथन दृष्टव्य है - '' कहानी भोगे हुए क्षणों की अभिव्यक्ति का माध्यम हैं।''[2] ओमप्रकाश वाल्मीकि ने तो भोगी हुई पीड़ित जिंदगी को अपनी कहानियों में अभिव्यक्ति दी है। उनकी कहानियों में वास्तविक समाज का चित्रण दिखाई देता है। उनकी कहानियाँ स्वानुभव की उपज लगती हैं। ये कहानियाँ पाठकों का मनोरंजन करने की अपेक्षा दलितों की विद्यमान परिस्थिति और समस्याओं को उजागर करती हैं। उनकी कहानियों का कथानक सदैव अबाध रूप से चलता रहता है और मोड़ लेकर सामाजिक परिवेश के जीवंत यथार्थ को पेश करते हुए आगे ब ़ता है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि की अधिकांश कहानियाँ दलित जीवन पर आधारित हैं और उसका सार्थक चित्रण ही उनकी विजय है। उनकी कहानियों में जाति, परिस्थिति, संस्कृति, वातावरण आदि से उपजी हुई कहानियों का प्रस्तुतीकरण हुआ है। उन्होंने अपनी कहानियों में कथानक और पात्रों को निसंकोच रूप से पेश किया हुआ दिखाई देता है। 'ग्रहण', 'बिरम की बहू' जैसी अनेक कहानियाँ इसके उदाहरण हैं। उनकी कहानियाँ रोचकता और कौतुहल बनाएँ रखते हुए दलित जीवन के संघर्षमय जीवन, उनकी यातना, प्रताड़ना, जिंदगी को जिद्दोजेहाद और अपमानास्पद जीवन आदि को उपस्थित करती हैं। आखिर में हम यह कह सकते हैं कि ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों के कथानक भावप्रधान और समस्या प्रधान हैं। उनकी कहानियों में घटनाओं का रहस्य, पात्र और चरित्र के स्वाभाविक विकास में नया मो ़ प्रस्तुत कर देता है। ओमप्रकाश वाल्मीकि की हर एक कहानी घटना एवं अपनी अनुभूति की स्मृति सिद्ध हुई है। उनकी कहानियाँ दलित जीवन अनुभूति को स्पंदित करने या उसे झकझोरनेवाले कथानकों से युक्त प्रतीत हुई हैं।

---

1 डॉ. सुरेश सिनहा - हिंदी कहानी: उद्‌भव और विकास, पृष्ठ 37

2 डॉ, रघुवीर दयाल वार्ष्णेय - हिंदी कहानी : बदलते प्रतिमान, पृष्ठ 9

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों ने जीवन के जटिल रूप को समझते-समझाते जीवन संघर्ष में व्याप्त अपने ही जीवन अनुभवों की साक्ष को प्रस्तुत किया है। जीवन विषयक चेतना को व्यापक बनाते हुए उनकी कलम से कहानियों ने जन्म लिया है। ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियाँ के कथानक भारतीय वर्ण व्यवस्था पर आघात करनेवाले दृष्टिगोचर होते हैं।

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियाँ कथानक की दृष्टि से आरंभ, मध्य और अंत की दृष्टि से भी विशेष और महत्त्वपूर्ण रूप से प्रस्तुत हुई दिखाई देती हैं। उनकी कुछ कहानियों के आरंभ कथावस्तु की आखरी घटना से शुरू होते हैं। अर्थात आरंभ कहानियों के अंत से शुरू हुए परिलक्षित होते हैं। कहानी के मध्य सक्षम हैं और अंत कुतूहल जनक परिणाम के साथ समाप्त होते है। यहाँ वाल्मीकि की कहानियों का आदि, मध्य और अंत की दृष्टि से विवेचन प्रस्तुत है -

5.2.1 कहानी का आरंभ -

कहानी में आरंभ महत्त्वपूर्ण होता है। वास्तव में यह कहानी का प्रवेश द्वार होता है। उत्कृष्ट और प्रभावी आरंभ के कारण ही पाठक की जिज्ञासा कहानी पढ़ने के लिए बढ़ जाती है। इस संदर्भ में सुरेश सिनहा का कथन दृष्टव्य है - '' अच्छी-अच्छी कहानियाँ भी गलत ढ़ंग से प्रारंभ किए जाने के कारण प्रभाव शून्य हो जाती हैं और पाठकों का ध्यान आकर्षित करने में असफल रहती हैं।''[1] इसलिए शीर्षक के उपरांत किसी भी कहानी का आरंभ महत्त्वपूर्ण अंग माना जाता है। ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों के आरंभ वर्णन के साथ हैं, तो कुछ स्थिति दर्शक है, और कुछ घटना के साथ, प्रतीत हुए हैं। आरंभ की दृष्टी से वाल्मीकि जी की कहानियों के कुछ उदाहरण यहाँ प्रस्तुत है -

5.2.2 वर्णन द्वारा आरंभ -

ओमप्रकाश जी की कहानियों के आरंभ वर्णन द्वारा भरी किए गए परिलक्षित होते हैं जैसे - '' बाँस सागवान और महुवे का मीलो तक फैला जंगल साफ करके कारखाने का

---

1 सुरेश सिनहा - कहानी : उद्भव और विकास, पृष्ठ 52

निर्माण हुआ था। आधुनिक सभ्यता के तौर-तरीकों से अछूती शस्य-श्यामला भूमि को निर्ममता से रौंद डाला गया था। बुलडोजर , मशीनें, ट्रैक्टर, मोटरें दिन-रात काम में जुट गए थे। मध्यप्रदेश, बिहार और यु.पी. के मजदूरों ने रात-दिन काम करके कारखाने की इमारतें खड़ी कर दी थी। देखते ही देखते प्राकृतिक वन प्रांत की जगह कंक्रिट का जंगल उग आया था।''[1] दूसरा एक उदाहरण देखिए -

'' दिसंबर के ठिठुरन भरे दिन थे । धूप जैसे नाजुक मिजाज होकर लुकाछिपी खेल रहीं थी। सर्द हवा कपड़ों की कई-कई तरह पार करके जिस्म में काँटे चुभो रही थी। ''[2]

5.2.3 कौतुहलवर्धक आरंभ-

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियाँ निश्चित लक्ष्य या प्रभाव को लेकर प्रस्तुत हुई है। उन्होंने अपने अनुभव शक्ति के सहारे कम-से-कम घटनाओं और प्रश्नों की सहायता से मनोवांछित कथानक, वातावरण,दृश्य एवं प्रभाव की सृष्टि की है। परिणाम स्वरूप उनके कथानक के आरंभ भी कौतुहलवर्धक प्रतीत होते हैं। इस गुण के कारण उनकी कहानी की ओर पाठक बढ़ता है और अपनी जिज्ञासा कहानी पढ़कर तृप्त करता है। 'यह अंत नहीं', 'शवयात्रा', 'गोहत्या', 'प्रमोशन', 'हत्यारे', 'कुचक्र', और 'जंगल को रानी' आदि कहानियाँ कौतुहलवर्धक आरंभ के कारण सफल बन गयी हैं।

5.2.4 चरित्रांकन द्वारा आरंभ -

ओमप्रकाश वाल्मीकि की लेखन-दृष्टि पात्रों के वास्तविक चित्रण पर अधिक केंद्रित रही है। उन्होंने पात्रों के बाह्य और आंतरिक दोनों प्रकार के चरित्रों का अंकन अपनी कहानियों में किया है। परिणाम स्वरूप उनका चरित्रांकन काफी सफल दृष्टिगोचर होता है। उनकी कुछ कहानियों के आरंभ चरित्रांकन द्वारा भी हुए हैं, जैसे -

''चौधरी ने बहुत ही लाड़-चाव से अपने इकलौते बेटे बिरमपाल का

---

1 ओमप्रकाश वाल्मीकि - सलाम, (' सपना' कहानी से) पृष्ठ 20

2 ओमप्रकाश वाल्मीकि - सलाम, ('कहाँ जाए सतीश' कहानी से) - पृष्ठ 48

ब्याह रचाया था। दुल्हन भी गरीब परिवार की परंतु रूप सौन्दर्य में लक्ष्मी-पार्वती से कम न थी। बिरमपाल भी दिन-रात दुल्हन के पल्लू से चिपका रहता था। चौधराइन भी खुश थी । बस उसके मन में एक ही लालसा थी कि बहू दन से एक प्यारा-सा पोता उसकी गोद में डाल दे, और हवेली बच्चे की किलकारियों से गूँज उठे ।''[1]

कहानी को प्रभावशाली बनाने और पाठक को कहानी के साथ बाँध देने के लिए ऐसे आरंभ अत्यंत उपयुक्त प्रतीत होते हैं।

5.2.5 आकर्षक आरंभ -

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियाँ जिस प्रकार भाषा की दृष्टि से सरल-स्पष्ट, प्रभावी एवं आकर्षक हैं उसी प्रकार उनकी कहानियों के आरंभ भी आकर्षक बन गए हैं। इसके कारण पाठक के मन में चेतना जाग जाती है और वह कहानी को पढ़ता है। आकर्षक आरंभ की दृष्टि से 'ब्रह्मास्त्र', 'हत्यारे', 'मुंबई कांड़', 'बैल की खाल' और 'भय' जैसी कहानियाँ महत्त्वपूर्ण महसूस होती हैं।

5.2.6 पत्रद्वारा आरंभ -

ओमप्रकाश वाल्मीकि की ' अंधड़ ' कहानी का आरंभ पत्र द्वारा हुआ है - '' वर्षों बाद वीना की चिट्ठी आई थी। वह भी दु:खद समाचार के साथ। चिट्ठी पढ़ते ही सविता गहरे अवसाद में डूब गई थी। वीना का एक-एक शब्द गर्म सलाखों की तरह उसे बींध रहा था। '' दीदी, तुम्हें लिखने का कोई औचित्य नहीं है। फिर भी लिख रही हूँ । पिता जी को गुजरे एक सप्ताह - हो गया है। माँ इस सदमे को बर्दास्त नहीं कर पा रही है। पिता जी ने सबके लिए कुछ-न-कुछ किया ..... लेकिन किसी के पास इतना समय नहीं है कि दो घड़ी बैठकर उनके परिवार को हौसला दे सके ....''[2]

निष्कर्षत: स्पष्ट है कि ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों के आरंभों में विविधता है। उनकी कहानियों ने आरंभ की दृष्टि से अपनी अलग पहचान बना ली है।

---

1 ओमप्रकाश वाल्मीकि - सलाम, ('ग्रहण' कहानी से) पृष्ठ 64

2 ओमप्रकाश वाल्मीकि - सलाम, ('अंधड़' कहानी से) पृष्ठ 85

5.2.7 मध्य -

"कहानी में कथावस्तु के विकास क्रम में आरंभ के उपरांत उसका मध्य भाग आता हैं। उसके अंतर्गत आरंभ और अंत को छोड़कर कहानी का शेष सारा भाग परिगणित किया जाता है।"[1] ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों का मध्यभाग तीव्र गति से पर्यवसान की ओर मोड़ लेता है और पाठकों की उत्कंठा अंत की ओर बढ़ने लगती है। उनकी हर एक कहानी में कथात्मकता को केंद्रभूत रखकर मध्य तनावग्रस्त स्थिति को प्रस्तुत कर रोचकता बढ़ाता हुआ दृष्टिगोचर होता हैं।

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियाँ विध्वंसवाणी में भी बोलती हैं। इसके लिए वे खुद जिम्मेदार नहीं बल्कि उनके युग का सवर्ण समाज है। उनकी कहानियाँ मध्य की दृष्टि से रचनास्तर पर प्रखरता से प्रस्तुत हुई हैं। अपनी कहानियों में समाज व्यवस्था और वर्ण व्यवस्था की उन्होंने धज्जियाँ उड़ाकर कहानी को सक्षम और महत्त्वपूर्ण बनने की क्षमता प्रदान की है। जैसे -- ' सपना ' कहानी में के. के. शर्मा एक अधिकारी हैं। उनका सपना था कि कारखाने की आवासीय कॉलोनी में एक मंदिर बने । मंदिर बनाने का प्रस्ताव तो पारित होता है। लेकिन के.के.शर्मा का अचानक तबादला होने के कारण कहानी के मध्य में यह प्रधान समस्या उपस्थित होती हैकी कौनसा मंदिर बने ? शिवमंदिर, लक्ष्मीमंदिर, रामकृष्ण मंदिर, बजरंग बलि का मंदिर ऐसे अनेक नाम मंदिर सूची में जुड़ जाते हैं। अत: इस कहानी का मध्य बहुत ही उत्कठा वर्धक बन गया है।

' खानाबदोश ' कहानी में मानो और सुकिया गरीब पति-पत्नी ईंटों की भट्‌टी पर काम करते हैं। इन दोनों का एक ही सपना है कि खुद का पक्की ईंटों का घर। इसलिए रात-दिन भट्‌टी पर काम करके भविष्य के प्रति आशावाद की उम्मीद रखते हैं। हाँलाकी दारिद्रय के भंवर ने इन दोनों को इतना फँसा लिया था कि खुद का घर उनके लिए पूर्णत: असंभव लगता है। कहानी में ईंट भट्‌टे के मालिक का बेटा सुबेसिंह है जो विकृत स्वभाव का है। उसने किसनी नामक नई-नवेली दुल्हन की जिंदगी खराब कर दी थी।

---

1 प्रतापनारायण टंडन - हिंदी कहानी कला, पृष्ठ 280

लेकिन इस कहानी के मध्य में सुबेसिंह की नजर किसनी की जगह मानो पर जाती है। वह दफ्तर में आने के लिए मानों को बुलावा भेजता है। इसका कारण है सिर्फ मछली को जाल में फँसाना । इसके कारण कहानी अपने ' मध्य ' में उत्कंठा वर्धक हो गई है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि के कहानी के मध्य बहुत ही रोमहर्षक तथा उत्कंठावर्धक बन गए हैं। उन्होंने अपनी कहानियों में ' मध्य ' की ओर विशेष ध्यान दिया हुआ परिलक्षित होता है।

5.2.8 कहानी का अंत -

कहानी आदि, मध्य और अंत के उत्कृष्ट ढ़ाँचे से बनी होती है। आरंभ और मध्य के साथ अर्थपूर्ण समाप्ति कहानी की कसौटी होती है। प्रतापनारायण टंडन लिखते हैं -" कहानी के आरंभ और मध्य भागों के उपरांत उसकी कथावस्तु का अन्तिम भाग आता है। यह भाग कहानी के आरंभ के भाँति उसके मध्य भाग की तुलना में अधिक महत्त्वपूर्ण होता है।"[1] प्राय: कहानी का अंत कहानी के लक्ष्य को स्पष्ट करना होता है, लेकिन ओमप्रकाश वाल्मीकि जी की ज्यादातर कहानियों के अंत अप्रत्यक्षित रूप से हुए हैं। उनकी कहानियाँ समस्याप्रधान होने के कारण उन्होंने यह जिम्मेदारी पाठकों पर सौंपने की कोशिश की है। यहाँ प्रतापनारायण टंडन का कथन दृष्टव्य है - " कहानी में चरणसीमा तब आती है जब पाठक में कथावस्तु विषयक उद्भावित कौतुहल भावनाओं का शमन किया जाए ।"[2] लेकिन ओमप्रकाश वाल्मीकि की कुछ कहानियों का अंत तो ऐसा है जिसमें पाठकों की कौतुहल भावना शमन हो जाने के बजाय और बढ़ती है। निष्कर्षत: स्पष्ट है कि उनकी कहानियों की समाप्ति मर्मस्पर्शी, अप्रत्यक्षित और अनिश्चयात्मक दिखाई देती है जिसमें पाठकों को सोचने के लिए प्रवृत्त करने की दृष्टि आधारभूत माननी पड़ती है।

5.2.9 मर्मस्पर्शी अंत -

ओमप्रकाश वाल्मीकि जी की कहानियों के ज्यादातर अंत मर्मस्पर्शी और

---

1 प्रतापनारायण टंडन - हिंदी कहानी कला, पृष्ठ 283
2 वही, पृष्ठ 283

भावस्पर्शी है। जैसे -- ' भय ' कहानी का अंत देखिए -- " उसकी हालत देखकर माँ भी चीख पड़ी । दिनेश उठकर दरवाजे की ओर भागा । किशोर और मामा ने उसे पकड़कर सँभालना चाहा । लेकिन वह इतनी तेजी से बाहर की ओर भागा वे उसे रोक नहीं पाए ।

दरवाजा खोलकर वह सड़क पर आ गया था। तेज गति से सड़क पर दौड़ने लगा । पीछे-पीछे मामा और किशोर भी दौड़ रहे थे। आसपास के फ्लैट्स की बत्तियाँ जल गई थी।

दिनेश बदहवासी में दौड़ रहा था। मादा-सुअर की घर्र-घर्र आवाज के साथ तिवारी का क्रूर अट्टाहास उसका पीछा कर रहा था । एक अनजानासा भय उसकी रग-रग में समा गया था। वह भाग रहा था। उसकी चीख रात की खामोशी में खो गई थी।

मामा और किशोर बहुत पीछे छूट गए थे। सड़क की पीली, निढ़ाल बत्तियाँ उदास होकर अँधेरे से लड़ने का प्रयास कर रही थी।"[1]

5.2.10 अनिश्चयात्मक अंत -

कभी-कभी कहानियों के अंत प्रश्नात्मक, अनिश्चयात्मक या दवंद्वात्मक भी होते हैं। ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानी के अंत स्थिति एवं परिस्थिति के अनुसार अनिश्चयात्मक भी परिलक्षित होते हैं। इस संदर्भ में प्रतापनारायण टंडन का कथन दृष्टव्य है- " कभी-कभी कहानी के अंतिम भाग को अनिश्चयात्मक रूप में ही मोड़ दिया जाता है।"[2] ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियाँ कुछ इस प्रकार की भी दृष्टिगोचर होती है, जिनका अंत अनिश्चयात्मक है। ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में दलितों को अलग मानकर उन्हें धर्म और समाज से बहिष्कृत करना, मंदिरों में (पूजा करना तो दूर) प्रवेश न देना, बेवजह उनपर अत्याचार करना और उनका शोषण करना आदि ऐसी कई स्थितियाँ दृष्टिगोचर होती है। मनुष्य और मनुष्य के बीच घृणा भाव पैदा करने वाली बहुत सारी स्थितियाँ हैं जिन्हें ओमप्रकाश वाल्मीकि ने सार्थक ढ़ंग से प्रस्तुत किया है। उनकी कहानियों की कुछ स्थितियाँ

---

1 ओमप्रकाश वाल्मीकि - सलाम, (' भय' कहानी से) पृष्ठ 47
2 प्रतापनारायण टंडन - हिंदी कहानी कला, पृष्ठ 286

तो ऐसी हैं जिनके अंत के बारे में वे खुद भी कुछ साफ-साफ नहीं कहते बल्कि कहानी का अंत अनिश्चयात्मक बनाते है, ताकि पाठक ही इसका निश्चित हल ढूँढ़ सके। जातीय अपमान के इस दंश को प्रत्येक कहानी में दलित चरित्र किसी न किसी रूप में झेलता ही है। आदमी-आदमी में फर्क करनेवाली यह मानसिकता दलितों के प्रति अत्यंत अन्यायकारक और हेय कहनी पड़ती है।

दलित जाति में जन्मना न कोई अपराध है और न ही कोई अभिशाप । फिर भी जातिगत एवं वर्णगत श्रेष्ठत्व की सोच दलितों के प्रति घृणा, तिरस्कार और अमानवीय व्यवहार क्यों रखती हैं ? ऐसे कई प्रश्न हमारे सामने उठते हैं। लेकिन ऐसे प्रश्नों का हल पाठक ही ढूँढ़ सके इसलिए उनकी कहानियों के अंत अनिश्चयात्मक प्रतीत होते हैं जैसे 'कहाँ जाए सतीश ?' कहानी का अंत देखिए --

" ऐजाज साहब के शब्दों ने सतीश के विश्वास को काँच की तरह चटका दिया । वह इतनी दूर इसी भरोसे पर चलकर आया था कि ऐजाज का खोखलापन इतनी जल्दी उजागर हो जाएगा । यह सतीश ने नहीं सोचा था।

उसे लगा जैसे चारों ओर से वह अँधेरे की बाढ़ में फँस गया है। उसने अहमद की ओर देखा वह अभी भी भट्ट्री के पास बैठा बल्ब के सेल बना रहा था। उसे लगा जैसे अहमद की जगह कोई छाया है जो सिर्फ हिल रही है।

वह थके हारे कदमों से फैक्टरी से बाहर निकला । अँधेरा और गहरा हो गया था। सुनसान सड़क पर उसके कदम सुस्त और निढ़ाल पड़ रहे थे। वह सिर्फ चल रहा था यह जाने बगैर कि उसे जाना कहाँ है। दूर कहीं चौकीदार की सीटी चीख रही थी, सन्नाटों को तोड़ती हुई। जैसे कह रही हो कहाँ जाए सतीश .....!"[1]

'प्रमोशन' कहानी का अंत भी इसी श्रेणी में आता है, जैसे --

" 'खुलकर बोलो ..... बात क्या है ?' सुपरवाइजर ने और अधिक जोर देकर पूछा ।

" साहब आपको नहीं पता ..... सुरेश स्वीपर है ..... उसके हाथ की

---

1 ओमप्रकाश वाल्मीकि- सलाम, ('कहाँ जाए सतीश' ? कहानी से), पृष्ठ 55, 56

चीज कोई कैसे खा-पी सकता है,'' अब्दुल ने आखिर रहस्य खोल ही दिया ।

किशोरीलाल गौत्तम को लगा, जैसे वर्कशाप की छत उसके सिर पर गिर पड़ी है और उसका वजूद मलबे में दब गया है। वह जैसे जोर-जोर चीख रहा है.....मुझे इस मलबे से निकालो .... मेरा दम घुट रहा है।

सुरेश अभी भी दूध की रखवाली कर रहा था। एक-एक पल उसे भारी लग रहा था। ' मजदूर-मजदूर भाई-भाई ' का नारा आज उसके रक्त प्रवाह को तेज नहीं कर रहा था। उसकी आँखों के सामने एक अजीब-सा अँधेरा घिर रहा था। उसने सुपरवाइजर की ओर देखा । वह बहुत गुस्से में उसकी ओर आ रहा था। चीखकर बोला, ' जाओ, उस पांडे को बुलाकर लाओ !' ''[1]

5..2.11 सोचने के लिए प्रवृत्त करने वाले अंत -

ओमप्रकाश वाल्मीकि एक अनुभव दग्ध लेखक हैं। उनकी कहानियाँ दलित जीवन से संबधित हैं, जो वास्तविक जीवन की साक्ष देती हैं। उनकी कहानियों में उन्होंने दलित लोगों के मनोविज्ञान से लेकर उनकी स्थिति, दशा, विवशता, यातनाएँ, प्रताड़ना, जिंदगी की जिददोजेहाद तथा उनका शोषण आदि कई पहलुओं को बारी की से उद्घाटित किया है। इसलिए उनकी कहानियाँ भाव स्पर्शी, मर्म स्पर्शी एवं दलितों के प्रति अत्याच्यारिक दृष्टिकोण से पीड़ित नजर आती है। उनकी कहानियों के अंत पाठकों को विचार प्रवृत्त करके सोचने के लिए विवश करनेवाले हैं। ' शवयात्रा', ' खानाबदोश ', 'यह अंत नहीं ', ' कहाँ जाए सतीश ', ' सपना ', ' कुचक्र ', ' दिनेशपाल जाटव उर्फ दिग्दर्शन और ' जिनावर ' आदि कहानियाँ इसके श्रेष्ठ उदाहरण माने जा सकते हैं।

सारांशत: ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों के अंत पाठकों को सोचने के लिए प्रवृत्त करनेवाले दृष्टिगोचर होते हैं। क्योंकि लेखक का विश्वास है कि जब तक हम सोचेंगे नहीं तब तक स्थिति यथावत बनी रहेगी । किंतु सोचने पर ही परिवर्तन की दिशा आरंभ हो सकती है। लेखक वस्तुत: परिवर्तन की आकांक्षा को आधारभूत मानकर कहानी

---

1 ओमप्रकाश वाल्मीकि - घुसपैठिये ('प्रमोशन' कहानी से) पृष्ठ 50

का सृजन करता है। यही वह कारण है कि लेखक अपनी कहानियों के प्रति सोचने के लिए विवश कर देने वाले अंत की व्यवस्था कर देता हुआ नजर आता है।

कथानकों में दलितों की दर्दभरी जिंदगी को ईमानदारी से प्रस्तुत किया है। लेकिन कहानियों के जो कथानक प्रस्तुत हैं वे आरंभ, मध्य और अंत की दृष्टि से काफी महत्त्वपूर्ण और सशक्त दृष्टिगोचर होते हैं।

निष्कर्षत: स्पष्ट है कि ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों का कथानक शिल्प कलात्मक तो है ही किंतु सुनिश्चित दृष्टिकोण तथा वस्तुस्थिति से जुड़ा होने के कारण महत्त्वपूर्ण सिद्ध होता है।

5.3 चरित्र-चित्रण -

कहानी में चरित्र-चित्रण एक मूल उपकरण है। इससे कहानी को चित्रात्मक अभिव्यक्ति मिल जाती है। सरजूप्रसाद मिश्र कहते हैं - " आज कहानियों में कथानक से अधिक महत्त्वपूर्ण चरित्र-चित्रण हैं।"[1] कहानी में कथानक के साथ ही चरित्र-चित्रण साधारणतया कहानी के विकास में पैदा किया जाता है। ओमप्रकाश वाल्मीकि एक सफल रचनाकार हैं। उन्होंने दलित मानव जीवन के विविध पहलुओं को प्रस्तुत किया है। इस संदर्भ में प्रतापनारायण टंडन का कथन दृष्टव्य है - " एक कहानीकार अपनी रचना में जो कथावस्तु अथवा पात्र योजना प्रस्तुत करता है, उसका मूल आधार मानव जीवन के विविध पक्ष होते है।"[2] ओमप्रकाश वाल्मीकि के पात्र और उनका चित्रण काफी मजबूत एवं प्रभावी बन गया है। उनके चरित्र चित्रण में यह विशेषत: है कि कहानियों में खण्डित मानवीय संकल्प, यातना, कष्ट और पीड़ा के क्षुब्ध कर देनेवाले स्वर तक पहुँचा देने की कथात्मक अन्विति विद्यमान है। ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों का आवरण आकर्षक है और उनके भीतर पात्रों का सम्मिलित विक्षोभ है। यही विक्षोभ पीड़ा और परिस्थिति का तीखापन

---

1 सरजू प्रसाद मिश्र - हिंदी कहानी के आधार स्तंभ, पृष्ठ 10

2 प्रतापनारायण टंडन - हिंदी कहानी कला, पृष्ठ 289

अख्तियार कर लेता है। उनकी कहानियों में जो पात्र हमारे सम्मुख उपस्थित होते हैं वे पीड़ामय दुनिया से सीधा साक्षात्कार कराते हैं, जो भयावह, विसंगत तथा विक्षुब्ध है। अधिकतर पात्र भीतर से बौखलाएँ और परेशान हैं। उनकी किसी भी कहानी में बेमतलब पात्रों का अतिक्रमण नहीं है। जब कहानी जीवन के यथार्थ की प्रतिछाया है, तो स्पष्ट है कि ये पात्र भी हमारे सामाजिक जीवन से ही लिए जाएँगे और उनका उसी यथार्थता से चित्रण भी किया जाएगा । ओमप्रकाश वाल्मीकि वह रचनाकार हैं जो दलित जीवन की चक्की में यातना के अनाज से उत्पन्न आंटे से पीस कर उपजे हैं। उन्होंने दलित जीवन देखा है, भोगा है और ऐसे ही अनुभवदग्ध प्रसंगों से उनकी कहानियों के पात्रों ने जन्म लिया है। उन्होंने उसी अनुभव और प्रसंगों का यथायोग्य पद्धति से चित्रण भी किया है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानी के पात्र मानवीय संवेदनशीलता को यथार्थ अभिव्यक्ति देते हैं । उन्होंने अपनी भावनाओं को पात्रों के माध्यम से ही सशक्त पद्धति से प्रस्तुत किया है। यहाँ प्रतापनारायण टंडन का कथन दृष्टव्य है - चरित्र चित्रण कहानी का सर्वाधिक वैशिष्टयपूर्ण उपकरण हैं, कहानी में इसी तत्व के माध्यम से लेखक मानव-चरित्र का विविध पक्षीय निरूपण करता है।''[1] इस तत्व को लेकर ओमप्रकाश वाल्मीकि अपनी रचना में बिल्कुल खरें उतरे हैं।

ओमप्रकाश वाल्मीकि के पीड़ित चरित्र सीधा पाठकों के अंत:करण को छु लेते हैं। लेखक ने पात्रों की मूल स्थिति और मानसिकता को प्रस्तुत किया है जिसकी आवश्यकता है। गाँव के सवर्ण लोग-दलितों की भर्त्सना करते हैं । दर्द, पीड़ा तथा यातनाओं से ओमप्रकाश जी के पात्रों ने जन्म लिया है। चरित्र-चित्रण में पात्रों के आंतरिक दंवृदव् का चित्रण करने में उन्हें काफी सफलता मिली है। इसलिए उनकी कहानियाँ कम से कम समय में उच्चता की कोटि पर पहुँच गई हैं।

ओमप्रकाश वाल्मीकि जी ने पात्रों को साकार रूप देने के लिए अपनी कहानियों में ऐसी चरित्र-सृष्टि कर दी है जिससे पाठक अपनी हुंकार से तिलमिला हो उठता

---

1 प्रतापनारायण टंडन - हिंदी कहानी कला, पृष्ठ 291

है। उनके लगभग सभी पात्र सशक्त हैं। उन्होंने सहायक पात्रों को भी चरित्र-चित्रण में न्याय देने की कोशिश की है। हमें यहाँ चरित्र-चित्रण के माध्यम से ओमप्रकाश जी के पात्रों का चयन, पात्रों की सजीवता, पात्रों की सीमित संख्या तथा नारी और पुरूष पात्र आदि संदर्भ में विशेष रूप से अध्ययन करना उचित लगता है।

5.3.1 पात्रों का चयन -

ओमप्रकाश वाल्मीकि की पात्र चयन-दृष्टि काफी सुसंगत दिखाई देती है। उनकी कहानियों में स्थिति के अनुसार पात्रों का आगमण होता है। कहानी जिस विषयवस्तु को स्पष्ट करती है, उसकी व्यापकता बढ़ाने का काम ओमप्रकाश वाल्मीकि अपने चरित्रों के माध्यम से करते हैं।

ओमप्रकाश वाल्मीकि की पात्रों की चयन दृष्टि के प्रति गहरी सामाजिक सोच, दलित चेतना से लगाव और जड़ता को तोड़ने की तड़फ है। ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियाँ यथार्थ से चुने गए पात्रों को अपने अभिप्राय सहीत प्रस्तुत करने की कोशिश करती हैं। उनकी कहानियों में पात्रों की भरमार नहीं। जो भी पात्र प्रस्तुत है वे संख्या में सीमित है और अपना अस्तित्व बनाएँ रखते हैं। मुख्य पात्रों के साथ गौण पात्रों को भी विशेष रूप से प्रस्तुत किया है,जो कहानी को सशक्त और संवेदनशील बनाते हैं। उनकी कहानियों में दलित, उच्च, धनवान,शोषक, शोषित, गरीब, ब्राह्मण, पीड़ित, ऐसे कई प्रकार के पात्र दृष्टिगोचर होते हैं।

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में चरित्रों के चित्रित किए गए भाव या संवेग और स्थिति का पाठकों के मन में तादात्म्य स्थापित हो जाता है। इसलिए वाल्मीकि जी का पात्र-चयन काफी सफल नजर आता है। उनकी कहानियों में हर पात्र और उसपर पड़नेवाला दबाव, उसकी स्थिति, दशा एवं उन पात्रों का सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक अध्ययन करके अपनी पात्र-चयन कुशलता ओमप्रकाश जी ने सिद्‌ध की है। इसलिए उनके पात्रों की आंतरिक और बाह्य, दोनों भावों की साक्ष हमारे सामने स्पष्ट होती है। निष्कर्षतः कहा जा

सकता है कि ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में पात्रों का चयन सहज स्वाभाविक है, जिससे कहानी की विषय वस्तु समझने में महत्त्वपूर्ण मदद मिलती है।

5.3.2 पात्रों की सजीवता -

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में उन्होंने पात्रों की स्थिति मनोदशा, व्यथा तथा पीड़ा को अपनी शब्द एवं भाषा शक्ति के माध्यम से इतना सजीव बनाया है कि इससे पाठक उसकी मन की स्पष्टता समझता है। साथ ही उनकी यथार्थता की खूबी तथा उनकी प्रामाणिकता की साक्ष भी मिलती है। इस संदर्भ में सुरेश सिनहा कहते हैं - ''वास्तव में पात्रों की सजीवता ही कहानी का आधार होता है। ''[1] ओमप्रकाश वाल्मीकि ने पात्रों के माध्यम से जहाँ मानवीय संवेदनाओं को अभिव्यक्त किया है वहाँ मूल्यों एवं मानवता की दृष्टि को भी स्पष्ट किया है। उनका प्रत्येक पीड़ित पात्र अपनी दुर्बलता एवं असहायता से प्रस्तुत हुआ है। उनके पात्रों के कुशल संयोजन के कारण पात्र सजीव बन पड़ें हैं। उनके पात्र सजीव दिखाई देने का और एक कारण यह है कि उन्होंने मानव जीवन के प्रश्न भिन्न रूपों में तथा यथार्थता को स्वाभाविक रूप में जीवन की मूल संवेदना के माध्यम से प्रस्तुत किया है। निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों के सभी पात्र सहज, स्वाभाविक महत्त्वपूर्ण और ये सभी पात्र सजीव परिलक्षित होते हैं।

5.3.3 पात्रों की सीमित संख्या -

किसी भी कहानी में पात्रों की सफलता और असफलता पर कई प्रश्न उठते हैं। लेकिन ज्यादातर कहानियों में पात्रों की सीमित संख्या ही कहानी को मजबूत बनाती है। ओमप्रकाश वाल्मीकि ने अपनी कहानियों में परिवेश के अनुसार ही पात्रों को स्थान दिया है। सभी पात्र कहानी में आवश्यकता के अनुसार ही प्रवेश करते हैं। ओमप्रकाश वाल्मीकि के कथानक भले ही व्यापक और संवेदनशील हो मगर उनके सीमित पात्रों ने कहानी को और अधिक मजबूत बनाया है। कहानी में पात्रों के संदर्भ में सुरेश सिनहा लिखते है -''पात्रों की संख्या से किसी को भी शिकायत नहीं हो सकती पर अनिवार्यता उन सभी का सफल

---

1 सुरेश सिनहा - हिंदी कहानी कला, पृष्ठ 73

निर्वाह भी होना चाहिए ।''[1] ओमप्रकाश वाल्मीकि ने अपने पात्रों द्वारा, पात्र के आकार-प्रकार, व्यवहार, स्वभाव और क्रिया-प्रतिक्रिया का परिचय घटना,संवाद एवं स्थिति अंकन द्वारा प्रस्तुत किया है। उनकी कहानियों में पात्रों की संख्या सीमित है और पात्र अपनी उपस्थिति महत्त्वपूर्ण पद्धति से दर्ज करता है। सारांशत: ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में पात्रों की संख्या सीमित होने के कारण उनकी कहानियाँ पढ़ने और समझने में आसान, सहज और प्रभावी सिद्ध होती है।

5.3.4 विवेच्य कहानियों में नारी तथा पुरूष पात्र -

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में ऐसे पात्र हमारे सामने आते हैं जो अपने जीवन-संघर्ष से पाठकों के मन में दयाभाव और सहानुभूति निर्माण करते हैं। वर्ण व्यवस्था के कारण दलित पात्र, मानव-जीवन की बहुत सारी सुविधाओं से वंचित तथा उपेक्षित नजर आते हैं। उनकी कहानियाँ स्त्री प्रधान तथा पुरूष प्रधान भी बन गई हैं। स्त्री-प्रधान कहानियों के अंतर्गत उन्होंने 'अम्मा', 'ग्रहण', 'बिरम की बहू' तथा 'जिनावर' आदि कहानियों को स्थान दिया है और पुरूषप्रधान कहानियों में 'सलाम ', 'संपना', 'मुंबई कांड' और 'दिनेशलाल जाटव उर्फ दिग्दर्शन' आदि कहानियाँ हमारे सामने आती हैं।

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में चाहे नारी पात्र हो अथवा पुरूष पात्र वे अपने जीवन के सुख-दु:ख, करूणा, एवं उल्लास तथा निराशा में जीते हैं और जीवन की नई दिशाएँ निर्मित करते हुए दृष्टिगोचर होते हैं। पुरूष और नारी पात्रों का अपना एक मनोविज्ञान प्रतीत होता है, ठीक वैसे जैसे साधारण मानव जीवन में प्रत्येक व्यक्ति का रहता है। इसका सफल चित्रण ओमप्रकाश जी की कहानियों में मिलता है।

ओमप्रकाश जी की कहानियों में ऐसे नारी पात्र हैं जिनके रूप-वर्णन, वेषभूषा-वर्णन की अपेक्षा उनका बोलचाल, उनका व्यवहार, दूसरे व्यक्ति से टकराने पर मन में उठा मानसिक आन्दोलन और प्रतिदिन घटनेवाली घटना के प्रभाव स्वरूप होनेवाले

---

1 सुरेश सिनहा - हिंदी कहानी कला, पृष्ठ 78

परिणामों पर लेखक ने अपनी अधिक दृष्टि चलाई है। पात्रों में बाहरी वर्णन से ज्यादा भीतरी वर्णन प्रणाली को उन्होंने अपनाया है। पुरूष पात्रों की भी लगभग ऐसी ही स्थिति है। निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि उनके नारी तथा पुरूष चित्रण में त्याग, अपमान, अवमानना उपेक्षा, प्रवंचना एवं शोषण आदि की भरमार मिलती है।

सारांशत: ओमप्रकाश वाल्मीकि के चरित्र चित्रण प्रभावी तथा व्यापक बन गए हैं। पात्रों का चयन, उनमें सजीवता, उनकी सीमित संख्या स्त्री तथा पुरूष पात्र आदि कई पहलुओं में चरित्र चित्रण सफलता के साथ पाठकों के सामने उपस्थित हुए हैं।

5.4 कथोपकथन -

कथोपकथन (संवाद) कहानी का महत्त्वपूर्ण तत्व है, जिससे कहानी में सजीवता निर्माण हो जाती है। कथोपकथन संबंधी केदारनाथ शुक्ल कहते हैं - ''कथोपकथन कहानी का सर्वोत्तम अंग है यह एक ऐसा आवश्यक तत्त्व है जो पात्रों से घनिष्ठ संबंध रखता है। इसी अंग द्वारा पात्रों के स्वभाव और चरित्र आदि का ज्ञान होता है।''[1] कहानी में कथोपकथन का महत्त्व अपरिहार्य माना जाता है। कथोपकथन के माध्यम से ही लेखक अपने उद्देश्य तत्त्व एवं विचार दर्शन को भी स्पष्ट करने की कोशिश करता है। कथोपकथन का संयोजन बड़ी कुशलता से होना अपेक्षित होता है। इसके अभाव में कहानी का प्रभाव शून्य रह जाता है। इस संदर्भ में सुरेश सिनहा का कथन दृष्टव्य है - ''यदि कथोपकथन कुशलतापूर्वक संयोजित न हुए तो उसकी रूचि न्यून हो जाएगी और वह कहानी को पाठक फेंक देगा।''[2] ओमप्रकाश वाल्मीकि ने अपनी कहानियों में कथोपकथन के माध्यम से अपना वाक्चातुर्य और स्वाभाविक जीवन के व्यावहारिक रूप को स्पष्ट करने की कोशिश की है। उनका कथोपकथन स्वाभाविक ढ़ंग से प्रतित हुआ है। कथोपकथन में संयत बदहवासी और उसके माध्यम से किसी सत्य तक पहुँचने की आक्रोश भरी यात्रा

---

1 केदारनाथ शुक्ल - प्रसाद की कहानियाँ , पृष्ठ 165

2 डॉ. सुरेश सिनहा - हिंदी कहानी : उद्भव और विकास, पृष्ठ 68

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में दृष्टिगोचर होती है। साथ ही अर्थ-संदर्भों से भरी स्थितियाँ भी हैं। उनकी कहानियों में कथोपकथन ने अनुभूति विकसित कर विचार की सघनता प्राप्त कर ली है। उन्होंने व्यक्तिमन और उसके परिवेश को बारीक से बारीक तथ्य को अंकित किया है। इसलिए ओमप्रकाश वाल्मीकि का कथोपकथन मजबूत हो गया है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि ने विशेषकर कथोपकथन का उपयोग नियोजित पात्रों के पारस्पारिक वार्तालाप के लिए किया है जिससे घटनाओं को गतिशिलता मिल गयी है। उनकी कहानियों में स्वाभाविकता, उपयुक्तता, अनुकूलता, संबंधता और प्रासंगिकता आदि गुणों की भरमार मिलती है। कहानीकार ओमप्रकाश वाल्मीकि ने कथोपकथन द्‌वारा कथानकों का विकास भी किया है। इससे कथानक की सजीवता में वृद्‌धि हुई है और कहानी कला के श्रेष्ठ पहलुओं को भी पाठकों के सामने पेश किया है। कहीं भी निरर्थक संवादों की गुंजाईश नहीं है। सभी संवाद सार्थकता के गुणों से युक्त हैं।

ओमप्रकाश वाल्मीकि एक कुशल कहानीकार हैं। जहाँ कहानी की कथावस्तु को घटनाओं के माध्यम से विकसित करना संभव नहीं हुआ वहाँ उन्होंने कहानी के पात्रों के पारस्पारिक वार्तालाप से कथा के भावी विकास की स्थिति को संतुलित बनाकर अनावश्यक विस्तार से कहानी को बचाया भी है। लेकिन आवश्यक विस्तार के लिए कहानी में विविधता, रोचकता और स्वाभाविकता प्रदान की है। प्रतापनारायण टंडन लिखते है - "सैद्‌धांतिक दृष्टि से तो कहानी के प्राय: सभी तत्त्व का संबंध होता है परंतु व्यावहारिक दृष्टिकोण से कथोपकथन का संबंध पात्रों से अधिक धनिष्ठ होता है।"[1] इसलिए ओमप्रकाश वाल्मीकि के पात्रों के संवादों से हमें उनके भाव एवं चरित्र की जानकारी मिलती हैं। उन्होंने अपनी कथोपकथन योजना अभिष्ट देशकाल अथवा वातावरण को विश्वसनीय बनाने के लिए भी की है। इसी कारण कथोपकथन द्‌वारा पात्रों का आस्तित्व यथार्थपरक प्रतीत हुआ है। ओमप्रकाश वाल्मीकि जी की कहानियों में, कथोपकथन की योजना अपने इच्छित वातावरण का चित्रण करने के लिए भी किया है। " कथोपकथन द्‌वारा कहानी के

---

1 प्रतापनारायण टंडन - हिंदी कहानी कला, पृष्ठ 332

सुन्दरतम स्थलों का तर्क-वितर्क और प्रतिपादन द्वारा चमत्कारपूर्ण बनाया जाता है। ''[1] इस सुमित्रा शर्मा के कथन के अनुसार ही ओमप्रकाश वाल्मीकि जी की कथोपकथन रचना प्रतीत होती है। उन्होंने अपनी कहानियों में संक्षिप्त, आकर्षक तथा सारगर्भित संवादों (कथपकथनों) का ही अधिक प्रयोग किया है। यद्यपि कहीं-कहीं लम्बे कथोपकथन (संवाद) भी आ गए हैं, जहाँ कहानीकार की भावुक प्रवृत्ति प्रबल हो उठी है, परंतु अधिकांशत: इनके संवाद छोटे तथा परिस्थिति के अनुकूल हैं, निरर्थक नहीं। उनके कथोपकथन के कुछ उदाहरण ऐसे भी है जो पात्रों की भावात्मक-सृष्टी प्रस्तुत करते हैं।

5.4.1 गुणों से युक्त तथा कलात्मक संवाद -

ओमप्रकाश वाल्मीकि की ने कहानियों में कथानक के विकास और पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं को उद्घाटित करने के लिए संवाद बड़े कौशल के साथ तथा कलात्मक ढ़ंग से प्रस्तुत किए हैं। उनकी कहानियों के संवाद, सूक्ष्मता, सांकेतिकता, रोचकता और नाटकीयता आदि गुणों से युक्त प्रतीत होते हैं। उदाहरण की दृष्टि से 'सपना', 'सलाम ', 'कहाँ जाए सतीश ', 'जिनावर', 'ब्रह्मास्त्र' और ' मैं ब्राह्मण नहीं हूँ ' आदि कहानियों के साथ लगभग सभी कहानियाँ गुणों से युक्त तथा कलात्मक संवादों के लिए महत्त्वपूर्ण सिद्ध होती हैं।

5.4.2 छोटे संवाद -

'' सुदीप ने पच्चीस का पहाड़ा दोहराया और जैसे ही पच्चीस चौका सौ कहा, उन्होंने टोका ।

''नहीं बेट्टे .... पच्चीस चौका सौ नहीं .... पच्चीस चौका ड़ेढ़ सौं....'' उन्होंने पूरे आत्मविश्वास से कहा ।

सूदीप ने चौंककर पिता जी की ओर देखा । समझाने के लहजे में बोला, ''नहीं पिता जी .... पच्चीस चौका सौ ..... यह देखो गणित की किताब में लिखा है ।''

''बेट्टे , मुझे किताब क्या दिखावे हैं। मैं तो हरफ (अक्षर) बी ना पिछाणूँ।

---

1 सुमित्रा शर्मा - कौशिक जी का कथा साहित्य, पृष्ठ 78

मेरे लेखे तो काला अच्छर भैंस बराबर हैं। फिर बी इतना तो जरूर जाणूँ कि पच्चीस चौका डेढ़ सौ होता है ।'' पिताजी ने सहजता से कहा ।

''किताब में तो साफ-साफ लिक्खा है - पच्चीस चौका सौ ....'' सुदीप ने मासूमियत से कहा ।

''तेरी किताब में गलत बी तो हो सके ... नहीं तो क्या चौधरी झूठ बोल्लेंगे । तेरी किताब से कहीं ठाड्डे(बड़े) आदमी हैं चौधरी जी । उनके धोरे (पास) तो ये मोटट्री -मोट्टी किताबें हैं.... वह जो तेरा हेडमास्टर है वो बी पाँव छुए है चौधरी जी के । फेर भला वो गलत बतावेंगे ....मास्टर से कहणा सही-सही पढ़ाया करे .... '' पिता जी ने उखड़ते हुए कहा ।''[1]

ओमप्रकाश वाल्मीकि के ' प्रमोशन ' नाम की कहानी में एक मजदूर के हर्षोत्साही संवाद भी महत्त्वपूर्ण लगते हैं। जैसे --

'' तू हमेशा पैसों के ही बारे में सोचेगी । मान-अपमान भी तो कुछ होता है। अरी पगली, अब हम भंगी नहीं रहे । मजदूर हो गए हैं।'' मजदूर ' पर उसने कुछ ज्यादा ही जोर देकर कहा था। ' देखा नहीं था .... मई दिवस पर कितना लम्बा जुलूस निकला था। उसमें सब मजदूर ही मजदूर थे .... कैसे-कैसे नारे लग रहे थे .... इन्क्लाब जिंदावाद .... मजदूर - मजदूर भाई-भाई ... अब मैं उस रैली में जाऊँगा .... लाल झण्डा उठाकर सबसे आगे चलूँगा .... इन्कलाब जिंदाबाद ''[2]

ओमप्रकाश वाल्मीकि ने समाज के जीवन संदर्भ को गहराई से देखा है। इसलिए उनके पात्रों के कथोपकथन में करूणा, दया, आगतिकता, कोमलता, आक्रोश, अर्थपूर्णता स्वाभाविक रूप में प्रस्तुत हुई है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कुछ कहानियों में पात्रों के अनुसार बड़े-बड़े संवादों की भी रचना मिलती है।

---

1 ओमप्रकाश वाल्मीकि - सलाम ('पच्चीस चौका ड़ेढ़ सौ' कहानी से) पृष्ठ 80

2 ओमप्रकाश वाल्मीकि - घुसपैठिये ('प्रमोशन' कहानी से) पृष्ठ 45

5.4.3 बड़े संवाद -

विवेच्य कहानियों में जिस तरह छोटे एवं संक्षिप्त संवादों का प्रयोग मिलता है। उसी तरह प्रसंग एवं स्थितियों के अनुरूप लंबे-लंबे संवाद भी प्रयुक्त मिलते हैं जैसे --

" तुम लोग अपने आपको समझते क्या हो ? तुम लोगों को सिर्फ बड़े-बड़े प्रमोशन चाहिए वे भी आरक्षण के भरोसे । बच्चों को स्कूल-कॉलेज में एडमिशन भी कोटे से ही चाहिए। लेकिन इस कोटे को बचाए रखने के लिए जब कुछ करने की नौबत आती है तो तुम लोगों को जरूरी काम निकल आते हैं या फिर दफ्तर से छुटट्री नहीं मिलती। तब रमेश चौधरी ही बनेगा बलि का बकरा । गालियाँ भी वही खाएगा । देखो साहब .... अगर भीड़ का हिस्सा बनने में आप लोगों को खतरा दिखाई देता तो ऐसी संस्थाओं को चंदा दो जो तुम्हारे हितों के लिए काम करती हैं.... तुम लोग इसी तरह उदासीन बने रहे तो वह दिन दूर नहीं जब आरक्षण को ये लोग हजम कर जाएँगे.... बाबा साहब तो है नहीं ..... और बाबा साहब के नुमाइन्दे बनने का जो ढ़ोंग कर रहे हैं वे भी संसद में पहुँचते ही गीदड़ बनकर उनकी गोद में बैठ जाते है जो आरक्षण विरोधी हैं, और तरह-तरह की नौटंकियाँ करने में माहिर हैं। न्यायाधीशों से फैसले दिलवाएँगे कि अब मेडिकल और इंजीनियरिंग में आरक्षण से दाखिला नहीं मिलेगा । इससे प्रतिभाएँ नष्ट होती हैं..... जैसे प्रतिभाएँ इनकी गुलाम हैं और सिर्फ इनके घरों में ही जन्मती हैं..... अरे इतने ही प्रतिभावान थे तो देश की यह हालत कैसे हो गई ......।"[1]

ओमप्रकाश वाल्मीकि ने अपनी कहानियों में कथोपकथन तत्त्व को प्रभावपूर्ण ढ़ंग से प्रस्तुत किया है। कथोपकथन में स्वाभाविकता, अनुकूलता, संबंधता, उपयुक्तता, प्रासंगिकता आदि गुणों के दर्शन भी मिलते हैं। इस तत्त्व के निर्वाह में लेखक को काफी सफलता मिली है।

---

1 ओमप्रकाश वाल्मीकि - घुसपैठिये ('घुसपैठिये' कहानी से) पृष्ठ 14

5.5 देशकाल वातावरण -

कहानी के कथानक को सजाने-सँवारने तथा सजीव बनाने में परिस्थितियों का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। देशकाल-वातावरण के बारे में प्रतापनारायण टंडन कहते हैं - " इस तत्त्व की आयोजना कहानी को विश्वसनीय एवं यथार्थात्मक पृष्ठभूमि प्रदान करने के लिए की जाती है।"[1] वातावरण कहानी का मुख्य साधन है जिसे ओमप्रकाश वाल्मीकि ने अपनी कहानियों में कुशलतापूर्वक प्रस्तुत किया है। इसके कारण कहानी की प्रभावमयता को तीव्र एवं गहरा बना दिया है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि एक अनुभवसिद्ध पुरूष हैं। अनुभवदग्ध पुरूषों की एक सचेत आत्मा होती है। वह आत्मा अनुभव के साथ कठोर यातनापूर्ण परिस्थिति से जुड़ी होती है। इसलिए उनका ध्यान सदैव वास्तविकता के भीतर अपने को 'सिचूएट' करता है और कहानियों को अंतरंग परिस्थितियों के साथ-साथ बहिंरग, परिस्थिति को प्रस्तुत करता है। इसी बहिंरग परिस्थिति को हम कहानी कला की भाषा में देशकाल वातावरण कहते हैं, जो ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में सार्थक रूप में दृष्टिगोचर हुआ है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों का वातावरण पाठकों पर संवेदनात्मक प्रभाव डालता है। नियोजित पात्र की घटना का, परिस्थिति का, संवेदनशील और सजीव वर्णन होता है। उन्होंने इसका चित्रण स्वाभाविक आकर्षक तथा पात्र की मानसिक स्थिति के अनुरूप किया है। एक बात महत्त्वपूर्ण है कि उनकी कहानियों के कथानक अनुभव पर आधारित लगते हैं। इसी कारण कहानियों का चित्रण अत्यंत स्वाभाविक तथा विश्वसनीय बन पड़ा है। डॉ. सुरेश सिनहा का कथन है - " वातावरण का अभिप्राय किसी देश समाज एवं जाति के आचार-विचार उसकी सभ्यता एवं संस्कृति, सामाजिक सांस्कृतिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों का चित्रण हैं।"[2] इसी दृष्टि से ओमप्रकाश वाल्मीकि की नजर दलित जीवन पर अधिकांश केंद्रित हुई है। वह तो दलित

---

1 प्रतापनारायण टंडन - हिंदी कहानी कला, पृष्ठ 412

2 डॉ. सुरेश सिनहा - कहानी उद्भव और विकास, पृष्ठ 105

जीवन के विचित्र एवं अस्वाभाविक अनुभवदग्ध पहाड़ से गुजरे हैं। परिणामतः विवेच्य कहानियों में वातावरण की निर्मिति साक्षात प्रकटने लगती है। उन्होंने अपनी कहानियों में वर्णित घटनाओं की सत्यता का विश्वास दिलाने के लिए अपने कथानक के तत्कालीन परिस्थिति को पूर्ण सजीव वातावरण के रूप में कुशलता के साथ उपस्थित किया है। जैसे - -" अगले दिन पंचायत बैठी, मंदिर के चबूतरे पर । मुखिया, सरपंच पंचायत के दूसरे सदस्य। मामला गोहत्या का था, इसीलिए समूचा गाँव इकट्ठा हो गया । प्रत्येक परिवार से एक-एक व्यक्ति आया था। बामन-राजपूत चबूतरे पर बैठे थे। चमार, मेहतर, नाई, धोबी, कहार सब चबूतरे से नीचे । पंडित रामसरन, मुखिया जी के बराबर बैठा हुआ था। वह धुला हुआ रामनामी ओढ़कर आया था। माथे पर लंबा-सा टीका दूर से ही दिखाई पड़ रहा था। सरपंच उम्र में सबसे बड़ा था। झुर्रियों वाले चेहरे पर सफेद मूँछें आज कुछ ज्यादा ही नुकीली बनाई गई थीं।"[1]

उसी प्रकार एक और उदाहरण देखिए - " एनामुल्ला बिल्डिंग का रास्ता लगभग सुनसान ही था। तहसील चौराहे के पास गौरव होटल की बत्तियाँ जगमगा रही थी। गेट के पास चौकीदार ऊँघ रहा था। डी.एस.ओ. ऑफिस से थोड़ा आगे बढ़ते ही देशी शराब की तेज गन्ध उसकी साँसो में घुस गई थी। उसने हाथ से ही नाक-मुँह बंद कर लिए थे। साँस रोक कर उसने रास्ता पार किया था शराब गोदाम के सामने से । शराब का यह गोदाम उतना ही पुराना था जितना यह शहर । सुबह की ताजा हवा में शराब की गंध तेज धारवाले किसी औजार की तरह उसे छील रही थी। खुशीराम लाइब्रेरी तक इस गन्ध ने उसका पीछा किया था। शिवालिक के पास खड़े होकर उसने लम्बी-लम्बी कई साँस छोड़ी। ताजा हवा को फेफड़ों में भरकर वह इस गन्ध से निजात पाना चाहता था।"[2]

देशकाल वातावरण के निर्माण के संदर्भ में एक और कथन देखिए - "बहू ने उसे खींचकर फर्श पर लिटा दिया । अँधेरी कोठरी में लालटेन की मध्दिम लौ काँपने

---

1 ओमप्रकाश वाल्मीकि - सलाम ('गोहत्या' कहानी से) पृष्ठ 59
2 ओमप्रकाश वाल्मीकि - घुसपैठिये ('कूड़ाघर' कहानी से) पृष्ठ 55

लगी। और दो जिस्म समय की माँग में सिंदूर भरने लगे ।

लोगों की भागमभाग सन्नाटों को बेध रही थी। जिनकी पदचाप अँधेरी कोठरी तक पहुँचना मुश्किल था। वहाँ सिर्फ दो साँसो के आरोह-अवरोह का शोर था।

और जब शोर थमा, बहू अस्त-व्यस्त कपड़ों में कच्चे फर्श पर पड़ी थी। रमेसर ने अपने फटे-पुराने कपड़े सँभाले और बहू की ओर देखा । बिरम की बहू तृप्त भाव से फर्श पर लेटी कृतज्ञ भाव से उसे निहार रही थी, उसने लेटे-लेटे ही कहा, ' दरवाजे के पास गेहूँ का एक कटट्रा रखा है। ले जाओ ....'

रमेसर को लगा सामने साक्षात लक्ष्मी लेटी है। सुंदर, कोमल, दयावान, अन्नपूर्णा। उसने झुककर बहू के चेहरे पर छितराए बालों को उँगली से सँवारा । गुलाबी गालों का चुंबन लिया और गेहूँ का कटट्रा उठाकर बस्ती की ओर चल दिया ।

गलियाँ सुनसान थीं। ग्रहण माँगने वालों का शोर गाँव के दूसरे छोर से छनकर आ रहा था। कुत्ते अभी भौंक रहे थे। जुम्मन के मुर्गे ने बाँग दे दी थी।

चंद्रमा, ग्रहण से उबरकर पूर्णता की ओर बढ़ रहा था।''[1]

ओमप्रकाश वाल्मीकि की सभी कहानियों में देशकाल-वातावरण का प्रभाव महत्त्वपूर्ण दिखाई देता है। घर, परिवार, व्यक्ति-व्यक्ति, व्यक्ति-समाज,सड़क, दूकान, परिस्थिति आदि का परिवेश वास्तविक लगता है।

दलितों की सवर्ण समाज के बीच फँसी स्थिति उनकी, पीड़ा, दयनीयता और कातरता स्पष्ट करने के लिए वाल्मीकि जी ने कहानियों में वातावरण सजीव बनाया है। इससे कहानियों की विश्वसनीयता बढ़ गई है। कहानी में कई स्थितियाँ ऐसी हैं जिसकी प्रामाणिकता और विश्वसनीयता को लेकर शंका उठाई जा सकती है। लेकिन देशकाल वातावरण से शंकित स्थितियाँ चकनाचूर हो जाती हैं और विश्वसनीयता बढ़ती है। उनकी कहानियों में देशकाल का प्रभाव अलग विशेषता कही जा सकती है।

---

1 ओमप्रकाश वाल्मीकि - सलाम ('ग्रहण' कहानी से) पृष्ठ 69

5.6 भाषा शैली -

मानव मन की अभिव्यक्ति भाषा के माध्यम से ही होती है। भाव, भावों और विचारों का प्रकटीकरण भाषा के माध्यम से होता है। भाषा के संदर्भ में सुमित्रा शर्मा लिखती है -" लेखक के विचार तथा भावनाओं को पाठक तक पहुँचानेवाली रचना के विविध अंगों की दृष्टि का साधन भाषा है।"[1]

5.6.1 भाषा -

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में पात्रों की मनस्थिति, परिवेश तथा मानसिकता के अनुसार भाषा का प्रयोग हुआ है। दलित जीवन की स्थिति, जीवन की विसंगतियाँ और उनकी वास्तविकता को ओमप्रकाश वाल्मीकि की भाषा सार्थक रूप में प्रकट करती है। उनकी भाषा विक्षोभ, करूणा, दया, माया, भावना, पीड़ा, आस्मिता की तलाश तथा आस्तित्व के लिए जूझनेवाले सरोंकारों को भी रेखांकित करती है। सवर्ण समाज के दलितों के प्रति निर्मम और अमानवीय व्यवहार पर तब गहरी सोच निर्माण होती है, जब पाठक ओमप्रकाश वाल्मीकि की भाषा की ताकत पर लक्ष्य केंद्रित करता है । यहाँ कृष्णदेव शर्मा का कथन दृष्टव्य है -" कोई भी साहित्यिक कृति भाषा के माध्यम से ही आकार ग्रहण कर सकती है। भाषा ही मूल तत्त्व है, जो कृति के विचारों को एक स्थान पर लिखित रूप में निबद्ध करके उसे अक्षुण्ण बनाती है और रचनाकार के विचारों को जनसमुह में परिव्याप्त करती है।"[2] कहानी कला में भाषा को बहुत महत्त्व है और वह भाषा जो सरल, सहज कहावतों से युक्त हो वही कहानी को व्यावहारिकता और विश्वसनीयता प्रदान करती है। ओमप्रकाश वाल्मीकि की भाषा कहानी की आधारभूत कथावस्तु, पात्र-योजना, शैली तथा वातावरण आदि के अनुरूप दिखाई देती है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि की भाषा में वर्णनात्मकता, उपदेशात्मकता, पात्रानुकूलता,आवेशमयता, गंभीरता, ग्रामीणता आदि विविध गुण एवं रूप मिलते हैं।

---

1 सुमित्रा शर्मा - कौशिक जी का कथा साहित्य, पृष्ठ 83

2 कृष्णदेव शर्मा - आधे-अधूरे : एक विवेचन, पृष्ठ 101

उनकी भाषा कहानी की ताकत बढ़ाती है। उन्होंने कोमल अनुभूतियों, भावनाओं एवं परिस्थितयों के मानवीय तथा प्रकृति के चित्र भाषा बदध् किए हैं। ओमप्रकाश वाल्मीकि की भाषा पात्रों के अनुसार वहाँ की बोली, देहाती भाषा, कहीं-कहीं - अँग्रेजी शब्द-प्रयोग तो कहीं कहीं पंजाबी वाक्यांश भी मिलते हैं। उनकी भाषा से विशिष्ट प्रकार के चरित्र का गुस्सा किस प्रकार का है यह समझ में आता है। कहीं-कहीं भाषा में पात्रों के माध्यम से गालियों के प्रयोग भी मिलते हैं। ओमप्रकाश वाल्मीकि की भाषा सरल, सीधी, प्रभावी होने के साथ-साथ रोचकता, सुबोधता, प्रभावमयता, पात्रानुकूलता, स्पष्टता, विषयानुकूलता आदि गुणों को भी अपनाती है।

निष्कर्षत: स्पष्ट है कि ओमप्रकाश वाल्मीकि की भाषा परिस्थिति के अनुरूप मोड़ लेती है। इसलिए उनकी कहानियों पर भाषा का समग्र प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

5.6.2 कहानी में लोकभाषा का प्रयोग -

विवेच्य कहानियों में अनपढ़ और देहाती पात्रों के अनुसार लोक भाषा का प्रयोग भी मिलता है। जैसे -- '' ईब मैंने तो पता नी .... कहाँ चला गिया । इनका तो बस यो ही हाल है। पता नी कद लौट्टेंगे .... तम इस बच्चे कू पकड़ के ले जाओ ''[1] उसी प्रकार '' किसन भैया ठीक कहवे थे पंचायत में नियाय ना होता, जात-बिरादरी देखी जावे है। गुंड़ागर्दी होती है पंचायत के नाम पे ''[2]

लोक भाषा के प्रयोग का एक और उदाहरण देखिए - ''क्या टेम आ गिया है। इब तो ढ़ोर-डंगर बी ना मरते....''[3] उसी प्रकार

''कहाँ मर गए थे भोसड़ी के .... तड़के से ढूँढ़- ढूँढ़ के गांडड्डे टूट गए हैं। और इब आ रहे हो महाराजा की तरियों .... इस बैल को कौन उठावेगा .... तुम्हारा

---

1 ओमप्रकाश वाल्मीकि - सलाम ('भय' कहानी से) पृष्ठ 41
2 ओमप्रकाश वाल्मीकि - घुसपैठिये ('यह अंत नहीं' कहानी से) पृष्ठ 28
3 ओमप्रकाश वाल्मीकि - सलाम ('बैल की खाल' कहानी से) पृष्ठ 35

बाप"[1] स्पष्ट है कि विवेच्य कहानियों में लोक भाषा अर्थात बोली का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में निलता है।

5.6.3 अँग्रेजी शब्द प्रयोग -

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में अँग्रेजी शब्द प्रयोग भरपूर मात्रा में मिलता है। कूड़ाघर , घुसपैठिये और ब्रह्मास्त्र कहानी में प्रयुक्त हुए अँग्रेजी शब्द इस प्रकार मिलते हैं । " रैली "[2], "अजेंडा"[3], "सेंट्रल"[4], "कमेटी"[5], "कोर्डिनेशन"[6], "क्लब"[7], "यूनिफॉर्म"[8], "कैलेंडर"[9], "होमवर्क"[10], "डॉक्टर"[11], "मेडिकल"[12], " रेस्टोरेंट"[13], "कॉलेज"[14], " डिग्री "[15]

5.6.4 फारशी तथा अरबी के शब्दों का प्रयोग -

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में फारसी तथा अरबी शब्दों का प्रयोग भी मिलता है।

---

1 ओमप्रकाश वाल्मीकि - सलाम (' सलाम' कहानी से), पृष्ठ 33
2 ओमप्रकाश वाल्मीकि - घुसपैठिये ('कूडाघर' कहानी से) ,पृष्ठ 51
3 वही, पृष्ठ 52
4 वही, पृष्ठ 52
5 वही, पृष्ठ 52
6 वही, पृष्ठ 52
7 वही, पृष्ठ 52
8 वही, पृष्ठ 52
9 वही, पृष्ठ 52
10 ओमप्रकाश वाल्मीकि - घुसपैठिये ('घुसपैठिये' कहानी से) , पृष्ठ 13
11 वही, पृष्ठ 13
12 वही, पृष्ठ 13
13 ओमप्रकाश वाल्मीकि - घुसपैठिये ('ब्रह्मास्त्र' कहानी से), पृष्ठ 81
14 वही, पृष्ठ 81
15 वही, पृष्ठ 81

फारसी शब्द -

"तनख्वा"[1], "उम्मीद "[2], "दस्तक"[3], "नौबत"[4], " रवैया"[5], "शायद"[6], "कोशिश"[7], " तब्दील"[8], " इर्द गिर्द"[9]

अरबी शब्द -

"इंतजार"[10], "इजाफा"[11], "कमीज"[12], "शुरू"[13], "लहजा"[14], "जरूर"[15], "रफा"[16], "दफा"[17], "तमीज"[18], "इज्जत"[19]

5.6.5 पंजाबी वाक्यांश -

ओमप्रकाश वाल्मीकि लिखित "कुचक्र" कहानी में कुछ पंजाबी वाक्यांश मिलते हैं - जैसे --

" डियर किन्ने बजे आ जाए निशिकांत दी वोट्टी

दो बजे आ जावे

---

1 ओमप्रकाश वाल्मीकि - सलाम ('पच्चीस चौका ड़ेढ़ सौ' कहानी से), पृष्ठ 78
2 वही, पृष्ठ 78
3 वही , पृष्ठ 78
4 ओमप्रकाश वाल्मीकि - घुसपैठिये ('घुसपैठिये' कहानी से), पृष्ठ 14
5 वही, पृष्ठ 18
6 वही, पृष्ठ 18
7 ओमप्रकाश वाल्मीकि - घुसपैठिये ('घुसपैठिये' कहानी से), पृष्ठ 18
8 वही, - घुसपैठिये ('कूडाघर' कहानी से), पृष्ठ 53
9 वही, पृष्ठ 58
10 ओमप्रकाश वाल्मीकि - सलाम ('पच्चीस चौका डेढ़ सौ' कहानी से), पृष्ठ 78
11 वही, पृष्ठ 78
12 वही, पृष्ठ 78
13 वही, पृष्ठ 79
14 वही, पृष्ठ 80
15 वही, पृष्ठ 80
16 ओमप्रकाश वाल्मीकि - घुसपैठिये ('घुसपैठिये' कहानी से), पृष्ठ 13
17 वही, पृष्ठ 13
18 वही, पृष्ठ 13
19 वही, पृष्ठ 10

कोई गल्ल नी है पापाजी ''[1]

ओमप्रकाश वाल्मीकि की भाषा में मनोवैज्ञानिकता दृष्टिगोचर होती है। उनकी भाषा पात्रों की स्थिति, दशा तथा मानसिकता के अनुरूप है। सारांशत: सुबोध और स्वाभाविक भाषा का प्रयोग करके उन्होंने अपनी कहानियों को सजीव बनाया है।

5.6.6 शैली -

भाषा में शैली गहनों का काम करती है। सुरेश सिनहा शैली के संबंध में कहते हैं -''**भावों की अभिव्यक्ति का माध्यम भाषा है और अभिव्यक्ति का ढ़ंग ही शैली है।**''[2] ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में घटनाप्रधान शैली, वर्णनात्मक शैली, विश्लेषणात्मक शैली, भावप्रधान शैली, आवेशमयी शैली आदि शैलियों के उदाहरण मिलते हैं। उनकी भाषा ही एक विशिष्ट प्रकार की शैली कहीं जा सकती है। ओमप्रकाश वाल्मीकि ने अपनी कहानियों में वातावरण, परिस्थिति और काल के अनुसार विविध शैलियों का प्रयोग किया है। भाषा शैली के संदर्भ में श्याम सुंदरदास का कथन दृष्टव्य है -'' भाषा सार्थक शब्द समुहों का नाम है जो एक विशेष क्रम से व्यवस्थित होकर हमारे मन की बात दूसरों के मन तक पहुँचाने और उसके द्वारा उसे प्रभावित करने में समर्थ होती है। अत: एवं भाषा का मूलाधार शब्द है, जिन्हें उपयुक्त रीति से प्रयुक्त करने के कौशल को ही शैली का मूलतत्त्व समझना चाहिए। अर्थात किसी लेखक या कवि की शब्द योजना वाक्यांशों का प्रयोग, पात्रों की बनावट, उसकी ध्वनि आदि का नाम ही शैली है।''[3] इस तरह की स्पष्टता वाल्मीकि जी की कहानियों में सुरक्षित है। दलित साहित्यिक के रूप में अपनी पहचान बनानेवाले ओमप्रकाश वाल्मीकि जी की कहानियों में दलित-जीवन-संघर्ष का सहज, स्वाभाविक और वास्तविक अंकन भाषा शैली द्वारा हुआ है। उनकी शैली का स्वरूप विविधता में व्याप्त है। जहाँ एक ओर कहानी कलात्मक परिपक्वता का द्योतन करती है, वहाँ दूसरी ओर प्रवृत्ति का परिचय भी देती है। उनकी भाषा विविधता के कारण

---

1 ओमप्रकाश वाल्मीकि - सलाम ('कुचक्र' कहानी से) पृष्ठ 107

2 सुरेश सिनहा - हिंदी कहानी : उद्‌भव और विकास, पृष्ठ 128

3 श्याम सुंदरदास - साहित्यालोचन, पृष्ठ 250

किसी एक शैली में नहीं बैठती, बल्कि परिवेश परिस्थिति एवं काल के अनुसार पात्रों को उनकी ही भाषा को साथ लेकर चलती है। कथात्मक, वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक तथा संवादात्मक आदि शैलियों में उनकी कहानियाँ विकसित हुई हैं। शैली का वैशिष्ट्य कहानी लेखक के व्यक्तित्व की मौलिक प्रतिभा सम्पन्नता का द्योतक होता है, इसलिए ओमप्रकाश वाल्मीकि भी इस तत्त्व को लेकर प्रमुख भूमिका में पाठकों के सामने उपस्थित हुए दृष्टिगोचर होते हैं।

5.6.7 कथात्मक शैली -

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कई कहानियों में कथात्मक शैली दृष्टिगोचर होती है। इस शैली में वाल्मीकि जी ने घटनाओं का और पात्रों का वर्णन किया है। उनकी कहानी शैली में तार्किकता और चमत्कारिता भी है, जिसके कारण कहानी में सजीवता और व्यावाहारिकता आदि गुण भी मिलते हैं। उनकी कहानियाँ यथार्थ हैं इसलिए उन्होंने कहानी में कल्पना को स्थान न देकर वास्तविकता को स्थान दिया है। कथात्मक शैली के उदाहरण ' जंगल की रानी, ' प्रमोशन', ' घुसपैठिये ' और ' अम्मा ' कहानी में दृष्टिगोचर होते हैं।

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में कथात्मक शैली का सुंदर प्रयोग उनकी 'बैल की खाल ' कहानी के इस उदाहरण द्वारा देख सकते है -

'' सुबह से दोपहर हो गई थी, काले और भूरे का कहीं अता-पता नहीं था। चारों ओर उनकी खोज हो रही थी। गाँव के बीचोबीच कुएँ के पास पंडित बिरिज मोहन का बैल बीच रास्ते में मर गया था। तड़के मुँह-अँधेरे पंडित बिरिज मोहन का हाली हल और बैल लेकर खेत जोतने निकला ही था कि कुएँ के पास से बैलों को उसने टिककारी दी। कुएँ के पास खड़ंजे पर फिसलन थी। बैल का पाँव फिसला और गिर पड़ा । हाली ने बैल को खड़ा करने की बहुत कोशिश की । बैल बूढ़ा और कमजोर था। पसली में चोट लगी और मर गया।''[1]

---

1 ओमप्रकाश वाल्मीकि - सलाम ('बैल की खाल' कहानी से) पृष्ठ 32

5.6.8 संवादात्मक शैली -

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियाँ संवादात्मक शैली में भी प्रयुक्त हुई दृष्टिगोचर होती है। सामाजिक परिवेश तथा परिस्थित के अनुरूप संवादों ने उनकी कहानियों को काफी सशक्त बनाया है। इस शैली के अंतर्गत पात्रों के संवादों को अधिक महत्त्व दिया जाता है। संवादात्मक शैली के उदाहरण ' यह अंत नहीं ' ,' पच्चीस चौका ड़ेढ़ सौ ' और ' ब्रह्मास्त्र ' आदि कहानी में मिलते हैं।

सारांशत: संवादात्मक शैली के दृष्टि से भी कहानीकार ओमप्रकाश वाल्मीकि काफी सशक्त एवं प्रभावी बन गए है।

5.6.9 वर्णनात्मक शैली -

इसमें लेखक स्वयं ही पात्रों के संबंध में बहुत कुछ कहता है। वह वर्णनात्मक शैली के द्वारा पात्रों के बाह्य व्यक्तित्व, परिस्थितियाँ, चाल-चलन, और वेषभूषा आदि का चित्रण करता है। ओमप्रकाश वाल्मीकि की ने कहानियों में इस शैली को लेकर अपनी उत्कठ इच्छा पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत की है। इस शैली के आधार पर ओमप्रकाश जी की कई कहानियाँ सक्षम बन गई है। जिनमें से कुछ कहानियाँ उदाहरण की दृष्टि से निम्नप्रकार है - 'ग्रहण', 'बिरम की बहू', 'जिनावर', 'कुचक्र', 'जंगल की रानी', 'बैल की खाल', 'दिनेशपाल जाटव उर्फ दिग्दर्शन', 'मुबंई कांड़', 'शवयात्रा', 'हत्यारे' आदि ....

सारांशत: वर्णनात्मक शैली के दृष्टि से भी ओमप्रकाश वाल्मीकि काफी सफल सिद्ध हुए है।

5.6.10 भावप्रधान शैली -

ओमप्रकाश वाल्मीकि दलित होने के कारण दलितों की भावुकता को समझकर उन्होंने पूर्ण भाव से कुछ कहानियों को पेश किया है। इसलिए उनकी कुछ कहानियाँ भावप्रधान शैली को भी उद्घाटित करती हैं। यहाँ 'कहाँ जाए सतीश' कहानी का उदाहरण दृष्टव्य है - '' उसने मुझे राखी बाँधी थी साहब..... पर आज .... उन्हें पता चल

गया कि मेरी जाति क्या है। साहब, भंगी होने से रिश्ते टूट जाते हैं ? .... मैं इस भंगीपन से छुटकारा पाना चाहता हूँ साहब । मैंने उन्हें धोखा नहीं दिया साहब..... रवि शर्मा मास्साब को मैंने सब कुछ बता दिया था। पंत जी ने कभी पूछा नहीं तो क्या बताता ? ... मेरी परीक्षाएँ पास हैं.... मुझे रहने की जगह चाहिए। साहब क्या मैं सिर्फ सफाई कर्मचारी ही बनने के लिए पैदा हुआ हूँ । मैं कुछ और कहना चाहता हूँ .....'' उसके रूँधे गले से शब्द ऐसे फूटकर बाहर आ रहे थे मानों कहीं बहुत अधिक दबाव पड़ रहा हो ''[1]

5.6.11 आवेशमयी शैली -

ओमप्रकाश वाल्मीकि जी की कहानियों में जब पात्रों को गुस्सा आता है तब वे आवेश में आकर अपना बोध व्यक्त करते है। कुछ उदाहरण देखिए -- ' सपना' कहानी में मंदिर बनाने के कार्य में गौत्तम ने काफी मदद की थी जो जाति से एस.सी. है और ऋषिराज का मित्र भी । मंदिर पूर्ण हो जाने पर नटराजन उसे पंडाल में आगे बैठने नहीं देता। जब सारी बातें ऋषिराज को मालूम हो जाती है तो वह क्रोधित होता है। वहाँ का माहौल बिगड़ता है। उपाध्याय की बात से ऋषी आपे से बाहर हो गया '' अरे, ओ, थाली के बैगन,तू आज यहाँ मंदिर का मालिक बनकर खड़ा हो गया है। उस रोज कहाँ था, जब ईंट-गारे का काम हो रहा था । तब तो रोज तेरा ब्लड प्रेशर लो हो जाता था। बुलाने से भी नहीं आता था। सौ-सौ बहाने ढूंढ़कर घर में बैठ जाता था। और आज यहाँ खड़ा होकर बकवास कर रहा है.... '' ऋषि ने चीखकर कहा ।''[2]

ऐसे आवेशमयी उदाहरण ' बैल की खाल ' , 'पच्चीस चौका डेढ़ सौ', और ' कुचक्र ' जैसी कहानियों में भी दिखाई देते हैं।

ओमप्रकाश वाल्मीकि जी की कहानियों में कथात्मक शैली, भावप्रधान शैली, आवेशमयी शैली के साथ ही वर्णनात्मक शैली, विश्लेषणात्मक शैली और संवादात्मक शैली के सुंदर उदाहरण मिलते हैं। शैली का विशेष महत्त्व दृष्टि में रखकर ही

---

1 ओमप्रकाश वाल्मीकि - सलाम ('कहाँ जाए सतीश ?' कहानी से), पृष्ठ 55

1 ओमप्रकाश वाल्मीकि - सलाम ('सपना' कहानी से), पृष्ठ 30

कहानी की योजना ओमप्रकाश जी ने बनाई है, जिसके कारण कहानी प्रतिभासंपन्न दिखाई देती है।

5.7 उद्‌देश्य -

कोई भी घटना हो या साहित्य, उसके पीछे कोई न कोई उद्‌देश्य होता है। ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियाँ दलित जीवन की समस्या और आँखों देखा हाल प्रकट करनेवाली हैं। इसकी रचना उन्होंने बड़ी आत्मीयता से की है। उद्‌देश्य के संदर्भ में प्रतापनारायण टंडन का कथन है - " कहानी के तत्त्वों में उद्‌देश्य तथा रस का अपना महत्त्वपूर्ण स्थान है।"[1] इस बात पर गौर करते हुए ओमप्रकाश वाल्मीकि ने अनुभवदग्ध जीवन की घटनाएँ अपनी कहानियों में प्रस्तुत की हैं। उन्होंने रचना-ज्ञान, बोध, चेतना, दलित जीवन एवं समाज के जातिवादी दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर कहानियाँ रची हैं।

ओमप्रकाश वाल्मीकि की दृष्टि उद्‌देश्य तत्त्व पर भी सचेत दृष्टिगोचर होती है। इससे रचना, प्रकृति, उसकी कार्यक्षमता, उसका प्रभाव क्षेत्र, उसकी सीमाएँ आदि का पता चलता है। प्रतापनारायण टंडन शैली के संदर्भ में लिखते हैं -" सैद्‌धांतिक दृष्टिकोण से प्रत्येक कहानी की रचना का एक उद्‌देश्य होता है। यह उद्‌देश्य पाठकों के मनोरंजन से लेकर गंभीर समस्या का निरूपण तक हो सकता है।"[2] उपर्युक्त विधान का विचार किया जाए तो ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में मनोरंजन का उद्‌देश्य शून्य है, लेकिन समस्याओं ने अपना गहरा और प्रखर रूप धारण किया है। अपने वास्तविक व्यक्तिचिंतन तथा व्यक्ति सत्य के आधार पर सामाजिक मान्यताओं को परखने के लिए ओमप्रकाश वाल्मीकि की साहित्यिक रचना उपयुक्त सिद्‌ध होती है। ओमप्रकाश वाल्मीकि का अधिकांश कहानी साहित्य इसी जीवन दृष्टि से व्याप्त और प्रभावित है, अधिकांश इसलिए की कहानियों की रचना इन्होंने समष्टि सत्य से प्रेरित होकर की है। यहाँ डॉ.

---

1 प्रतापनारायण टंडन - हिंदी कहानी कला, पृष्ठ 443

2 वही, पृष्ठ 445

लक्ष्मीनारायण लाल का कथन दृष्टव्य है -" वस्तुत: जिस कहानीकार की अनुभूति, संवेदना जितनी गहरी और महान होगी, उसकी कहानी उतनी शाश्वत होगी और जिस कहानीकार का उद्देश्य उसका व्यक्तित्व जितना महान होगा, उसकी कहानी उतनी ही महान होगी।"[1] ओमप्रकाश वाल्मीकि की रचनाएँ तो अनुभवदग्धता से उपजी हैं इसलिए उत्कृष्ट और महान है क्योंकि जीवन की ढ़ेर सारी सच्चाइयों और बहुत कुछ सहने के बावजूद बहुत सारी अच्छाईयों को सहेज कर रखनेवाले इन्सान के रूप में किसी को देखना हो तो ओमप्रकाश वाल्मीकि ही ऐसा नाम है जिसे पूरी मजबूती के साथ उदाहरण के तौर पर पेश किया जा सकता है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों को 'अनुभव विश्व' के रूप में भी व्याख्यायित किया जा सकता है। उनकी कहानियाँ मणुष्य-जीवन का मूल्यांकन और दलित जीवन को केंद्र में रखकर प्रस्तुत होती हैं। उनका उद्देश्य उपदेशात्मक भी माना जा सकता है। उनकी कहानियाँ दलित जीवन और उनकी समस्याओं की ओर ध्यान आकृष्ट कर समाधान की तलाश करने की कोशिश भी करती हैं। उनकी हर एक कहानी उद्देश्यपूर्ण है। 'सलाम' कहानी में सवर्ण पात्र कमल उपाध्याय को एक दलित बारात में जाने से गाँव में चाय को दूकान पर अपमानित होना पड़ता है। तो दूसरी ओर दलित हरीश पूर्वपरंपरा से चली आयी 'सलाम' प्रथा का विरोध करता है।

' मुंबई कांड ' कहानी में मुंबई में मारे गए दलित बांधवों के प्रति अफसोस करनेवाले सुमेर विपरीत और क्रूर विचार से प्रेरित होकर मूर्तियों को अपमानित करने हेतु योजना बनाता है, लेकिन अंत में उसकी गहरी सोच आदर्शमय विचारों को प्रस्तुत करती है।

' शवयात्रा ' कहानी में दलितों में भी उच्च-नीच के भेद कारण विवशता वश अकारण एक बच्ची की जान चली जाती है इसका चित्रण है।

'जंगल की रानी' में बेकसूर लड़की धनिक और क्रूर लोगों के वासनाओं का शिकार होती है। इसका पर्दाफास करने की कोशिश करनेवाले को भी अस्पताल में

---

1 डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - हिंदी कहानियों की शिल्प विधि का विकास, पृष्ठ 318

जीवन-मृत्यु के बीच जूझना पड़ता है।

'कुचक्र', 'खानाबदोश', 'कहाँ जाए सतीश', 'ब्रह्मास्त्र', 'बैल की खाल', 'गोहत्या', 'पच्चीस चौका डेढ़ सौ' आदि कहानियाँ सवर्णों की संवेदन हीनता की कहानियाँ हैं। इन कहानियों के दलित पात्र सवर्णों की जिन क्रूरताओं से गुजरते हैं और जितनी भयानक यातनाएँ भोगते हैं वे दिल दहला देती हैं कि इनमें बेवजह पात्रों को सजा दी जाती है। इन कहानियों से ऐसा प्रतीत होता है कि सवर्णों में दलितों के बारे में भाव बिल्कुल ही नहीं हैं।

' बिरम की बहू ' कहानी में बहू दलित रमेसर के कारण बांझपन के कलंक से छूटकारा पाती है। लेकिन बाद में उसे देखती तक नहीं। इसके साथ 'जिनावर', 'दिनेशपाल जाटव उर्फ दिग्दर्शन', 'यह अंत नहीं', 'हत्यारे', 'घुसपैठिये', 'भय', 'ग्रहण'... आदि कहानियाँ भी उद्देश्य-पूर्ति की दृष्टि से सफल दृष्टिगोचर होती हैं।

यह निर्विवाद सत्य है कि ओमप्रकाश वाल्मीकि जी की कोई भी कहानी निरूद्देश्य नहीं है। उनके उद्देश्य का अर्थ मात्र उपदेशात्मकता या समस्यात्मकता नहीं बल्कि इसकी सत्यता, सार्थकता, यथार्थता और यथा स्थितिंवादी मानसिकता में परिवर्तनशीलता जैसे विविध आयाम भी हैं।

अंत में उद्देश्य की दृष्टि से ओमप्रकाश जी की सारी मेहनत सफल नजर आती है। विवेच्य कहानीकार ने भावनाओं और विचारों की अभिव्यक्ति के लिए विशेष रूप से कथा साहित्य को माध्यम-स्वरूप चुना और उसमें अनेक प्रकार के मौलिक प्रयोग प्रस्तुत किए। लेकिन सब से ठोस निष्कर्ष यह कि उनकी हर कहानी उद्देश्य पूर्ति का दावा करती हुई दृष्टिगोचर होती है।

निष्कर्ष -

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों का अनुशीलन करने के पश्चात यह स्पष्ट हो जाता है कि उनकी रचनाओं में कहानीकार की अनुभूति तथा अनुभव तत्त्व प्रधान रहे हैं। अनुभव, विचार तथा गहरे अध्ययन के साथ वे अपनी कहानियों में उतरते हैं।

इसलिए उनकी कहानियाँ पठनीय तथा विचारोत्तेजक हो गई हैं।

कहानी कला की दृष्टि से ओमप्रकाश जी कहानियाँ काफी प्रभावपूर्ण और प्रयोजनात्मक दिखाई देती है। कहानियों के शीर्षक आकर्षक, प्रभावी एवं अर्थपूर्ण हैं। कथानक सोद्देश्य, संक्षिप्त, लंबे, छोटे और स्वाभाविक रूप में दृष्टिगोचर होते हैं। साथ ही साथ कथानक आदि मध्य और अंत की दृष्टि से महत्त्वपूर्णता की सीढ़ी पार करते हैं, जिससे पाठक कहानियों के प्रति आकृष्ट होते हैं। चरित्र-चित्रण में पात्रों की योजना अत्यंत स्वाभाविक बन गई है। उनके कुछ पात्र प्रतिकात्मक रूप से प्रकट हुए है तथा सामाजिक रूप से विवश और दयनीय भी लगते हैं। उनके द्वारा चित्रित आदर्शवादी पात्रों के साथ दबे हुए, विवश, संघर्षशील, पीड़ित पात्रों के चित्रण भी मिलते हैं।

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में कथोपकथन के कारण वास्तविकता और भी अधिक सजीव लगती है। उनके संवाद अर्थपूर्ण, सुगठित और स्वाभाविक परिलक्षित होते हैं। उनकी कहानियों में स्थानीय लोक भाषा के प्रयोग भी मिलते हैं। उन्होंने संवादों की मदद से मानव जीवन की विवशता को भावात्मक एवं विचारात्मक रूप से प्रस्तुत किया है। कहानी में देशकाल वातावरण कहानियों को और अधिक मजबूत तो बनाता ही है, साथ-ही-साथ कहानी को यथार्थता की ओर भी ले जाता है। देशकाल वातावरण में वाल्मीकि जी ने दलितों के प्रति अत्याचारित और आंतकित वातावरण को भी प्रस्तुत किया है जिससे दलितों के यातनामय, पीड़ादायक और मजबूर वातावरण से पाठक भी तिलमिला उठता है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि की भाषा अत्यंत सीधी, सरल और स्वाभाविक प्रतीत होती है। भाषा में जटिल स्थितियों, भावों और घटना प्रवृत्तियों को अभिव्यंजित करने के लिए स्थानीय बोली में अनेक सार्थक प्रयोग किए हैं। इसलिए पाठकों को आकर्षित तथा प्रभावित करने में भाषा सफल हुई है। उनकी भाषा में वर्णनात्मकता, पात्रानुकूलता, आवेशमयता, गंभीरता आदि का प्रयोजन मिलता है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि की शैली में वर्णनात्मक, संवादात्मक, कथात्मक, आवेशमयी, मनोविश्लेषणात्मक आदि का प्रयोजन दृष्टिगोचर होता है। विविध शैलियों के कारण उनकी कहानियाँ सौन्दर्यमय हो गई हैं। ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों का उद्देश्य दलित जीवन की समस्याओं के साथ उनकी यातना, पीड़ा, दु:ख-दर्द, परिस्थिति आदि को उजागर करना और समाधान पूर्ति के लिए प्रयत्नशील रहना ही है। वाल्मीकि जी ने अपनी कहानियों में वास्तविक विचार तथा दलित-पात्रों की मनस्थिति को चरित्र-चित्रण द्वारा प्रस्तुत कर अपने क्रांतिकारी विचारों से वर्णाश्रित समाज व्यवस्था और उनके विद्रुप, राक्षसी वृत्ति पर गहरा अक्रोश प्रकट किया है। निष्कर्षत: स्पष्ट है कि दलितों की समस्या और स्थिति को लेकर ओमप्रकाश वाल्मीकि ने अपनी कहानियों का उद्देश्य व्यापक और गहरा बनाया है। जिसमें प्राथमिक रूप से दलित समस्या और उनकी पीड़ा को वाणी दी है। अंतत: हम यह कह सकते हैं कि उद्देश्य की दृष्टि से ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियाँ अंत्यत श्रेष्ठ और महत्त्वपूर्ण परिलक्षित होती हैं, और समग्र रूप अर्थात कहानी कला की दृष्टि से उनकी कहानियाँ अपने आप में विशेष महत्त्व रखते हुए वैशिष्टयपूर्ण हो गई हैं।